श्रीमती देशबंधु

कर्म सिद्धांत

कर्मचक्र का आधुनिक विश्लेषण

(ऑटोमैटिक राइटिंग मटेरियल)

कर्म सिद्धांत

कर्मचक्र का आधुनिक विश्लेषण (ऑटोमैटिक राइटिंग मटेरियल)

श्रीमती देशबंधु

MB Publishing House

Copyright © २०२२ एम.बी. पब्लिशिंग हाउस

भारत में पहली बार २०२० में प्रकाशित
©२०२२ एम.बी. पब्लिशिंग हाउस, सर्वाधिकार सुरक्षित
एम.बी. पब्लिशिंग हाउस
पहला संस्करण, अक्टूबर २०२०
दूसरा संस्करण, अप्रैल २०२२
प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बि ना इस प्रकाशन के कि सी भी भाग को पुन: प्रस्तुत या संग्रहि त नहीं कि या जा सकता है, या कि सी भी रूप में या कि सी भी माध्य म से; इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य था प्रसारित नहीं कि या जा सकता है।

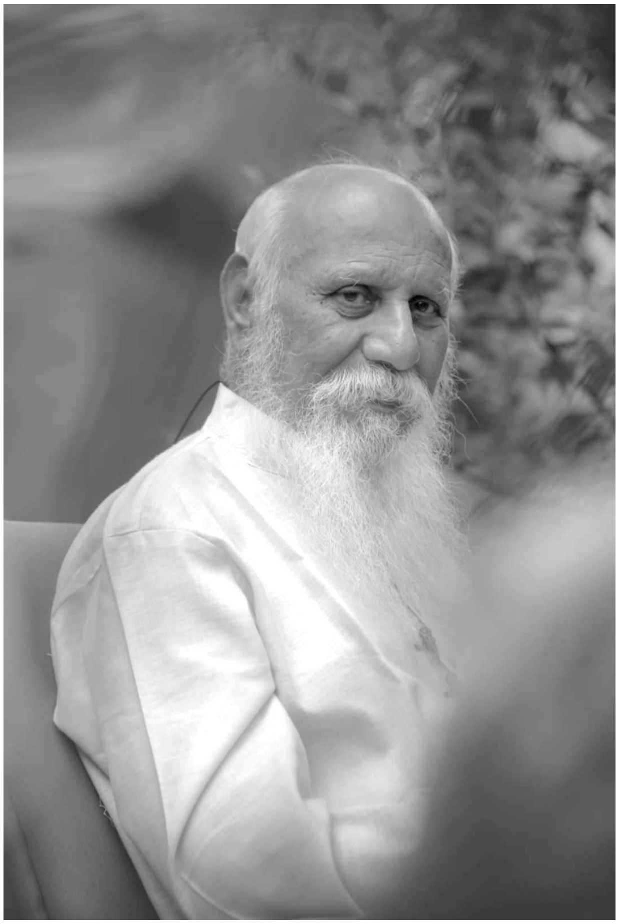

ब्रह्मर्षि पितामह पत्री जी

संस्थापक,
पिरामिड स्पिरिचुअल सोसाइटीज़ मूवमेंट
www.pssmovement.org

कर्म सिद्धांत

सिद्ध पुरुषों का अंतिम ज्ञान ही सिद्धांत है!
निरंतर साधना की अंतिम स्थिति ही सिद्धत्व है!
सृष्टि में मात्र एक ही सिद्धांत है!
वह एकमात्र सिद्धांत ही 'कर्म सिद्धांत' है!
जो जितना करता है, उसको उतना मिलता है!
जो नहीं करता, उसको नहीं मिलता!
यद् भावं तद् भवति महादेवा!
यद् भवति तद् भावं महादेवा!!
हमारी भावनाएँ ही हमारा यर्थाथ हैं।
हमारी यथार्थ से ही पुन: हमारी भावनाओं का उदय होता है।
इस सनातन सिद्धांत का नूतन विवरण और आधुनिक विश्लेषण..
भीष्म पितामह द्वारा पिरामिड जगत के लिए एक अद्भुत उपहार है!
पिरामिड मास्टर्स सभी हुए कर्मशास्त्र वेत्ता।
कर्म सिद्धांत के ज्ञान से ही उत्पन्न होता है कर्मयोग!
"कर्मयोग" के बारे में श्री विवेकानंद जी ने अद्भुत
संदेश दिया है।
अब, सभी पिरामिड मास्टर्स कर्म शास्त्रज्ञ हैं।

- ब्रह्मर्षि पितामह पत्री जी

CONTENTS

Title Page
Copyright
कर्म सिद्धांत
कर्म विधान
बुरा कर्म
अच्छा कर्म
सत्य कर्म
सच्चा मार्ग
सत्य कर्म
सच्चा मार्ग
कर्म चक्र सिद्धांत क्या है?
कर्म योग
आनापानसति ध्यान
सुभाष पत्री जी
Note from the Publisher

कर्म विधान

आत्माओं का सर्वप्रथम ज्ञान यह है कि उन्हें मालूम है हम सब परमात्मा के अंश हैं। आत्माओं की कोई इच्छा नहीं होती। उनमें अनंत शक्ति, सामर्थ्य, विस्तृत रूप से देखने की शक्ति, जहाँ चाहे वहाँ जाने की शक्ति, एक लोक में सीमित न रहकर सभी लोकों, सभी ऊर्जा तरंगों में प्रवेश होने की शक्ति होती है।

एक समय, सृष्टिकर्ता ने कुछ अनुभव पाने की इच्छा से, अपने द्वारा सृजन की हुई आत्माओं को मन द्वारा विचार करने की शक्ति देकर, उन्हें विविध लोकों मे भेजा। समस्त आत्माओं को दो भागों में विभाजित किया गया ।

पहला वर्ग - "विवेक क्षेत्र आत्माएँ"

(Intellectual Zone Spirits)

दूसरा वर्ग - "स्वछंद विचार क्षेत्र आत्माएँ"

(Free Will Zone Spirits)

विवेक क्षेत्र में शास्त्रीय दृष्टिकोण से अत्यंत प्रगति प्राप्त आत्माएँ हैं। शास्त्रीयता में अति उन्नत स्थिति प्राप्त होने की वजह से उन्होंने स्वयं ही सृष्टिकर्ता की तरह रचना प्रारंभ कर दी।

उनमें अद्भुत शक्तियाँ हैं, इसलिए वह अपनी शक्ति द्वारा अन्य क्षेत्र की आत्माओं को अपने वश में कर सकती हैं। कुछ अनुभव प्राप्त करने के लिए, अपने अभिप्रायों को पूरा करने के लिए वह अन्य क्षेत्र की आत्माओं पर दबाव भी डालती हैं। प्रकृति सिद्धांत यह कहता है कि जब तक आत्मा अपने कर्म ऋण को उचित कार्यों द्वारा चुका नहीं देती, वह कर्म से मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती।

विवेक क्षेत्र में स्थित आत्माओं की प्रगति बहुत ही धीरे-धीरे होती है। आध्यात्मिक प्रगति मंद गति से होने पर भी वह शास्त्रीय दृष्टि से अति उन्नत स्थिति को प्राप्त होती हैं। उनमें से कुछ, प्रवक्ता के रूप में तैयार होकर औरों का मार्गदर्शन करते हुए, उनकी अंतिम ध्यान साधना में सहायक होती हैं। विवेक क्षेत्र की आत्माओं के विषय में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। उसकी चर्चा हम आगे करेंगे।

अब हम "स्वछंद विचार क्षेत्र" आत्माओं के बारे में चर्चा करेंगे। हम इसी क्षेत्र से संबंधित हैं अत: "स्वछंद विचार क्षेत्र" के बारे में विस्तार से जानेंगे।

भूलोक (पृथ्वी) इस क्षेत्र के अंतर्गत ही आता है। हमें यह जानना जरूरी है कि भूलोक के अलावा बहुत सारे अन्य लोक भी इस क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। सूक्ष्म लोक तथा कुछ भावना लोक भी इस क्षेत्र में आते हैं। परंतु अभी हमें दूसरे लोकों के बारे में जानने की आवश्यकता नहीं है।

कर्म चक्र कैसे प्रारंभ हुआ? हम सब कर्म चक्र में बंदी क्यों हैं? उसका सिद्धांत क्या है? कर्म ऋण को किस प्रकार चुका सकते हैं? इस चक्र से किस प्रकार बाहर निकलें? आदि प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक व्यक्ति को इनके बारे में गहराई से जानना चाहिए। इसलिए एक के बाद एक विस्तार से जानेंगे।

"कर्म चक्र" कैसे प्रारंभ हुआ.. इस विषय को जानने से पहले, समुदाय में इसके प्रति किस प्रकार का "बोध" है, इसके विषय में जानकारी लेंगे। हिंदू धर्म के सिद्धांतानुसार, "व्यक्ति को अपने कर्म चक्र का पूर्ण रूप से अनुभव होने के पश्चात ही ज्ञानोदय होता है। इसकी अनुभूति न होने तक आनंद की अनुभूति भी नहीं होती है। कर्म ऋण को संपूर्ण रूप से जब तक चुकाते नहीं, तब तक हम कष्टों से मुक्त नहीं हो सकते। जो कर्म श्रृंखला से छूट जाते हैं, उनके लिए देवलोक प्रतीक्षा करता है।"

बौद्ध धर्म के अनुसार, "एक व्यक्ति अपने कर्मों के कारण उत्पन्न हुए विरोधात्मक भावों को, इच्छाओं को, जब तक नहीं छोड़ेगा, तब तक वह निर्वाण को प्राप्त नहीं कर सकता। कोई भी हमें कर्म श्रृंखला से बाहर नहीं निकाल सकता। हमें अपने स्वयं के प्रयत्नों द्वारा ही बाहर निकलना होगा।"

इस्लाम धर्म के अनुसार, "सन्मार्ग पर चले तो स्वर्ग जा सकते हैं, अन्यथा नरक लोक हमारी प्रतीक्षा करेगा।"

ईसाई धर्म के अनुसार, "भगवान के सामने अपनी गलतियों को स्वीकार करके, उनके प्रति विश्वास रखें तो हमें स्वर्ग की प्राप्ति होगी, अन्यथा नरक का अनुभव करना पड़ेगा।"

वास्तव में, पहले दो धर्मों में कर्म सिद्धांत के सत्य की निश्चित रूप से विस्तृत व्याख्या की गई है।

श्री कृष्ण के जीवन को उदाहरण के रूप में देखें तो उन्होंने अनेक गोपियों तथा शिष्यों को अपने प्रेम से बंधित किया है।

महाभारत युद्ध की प्रारंभिक दशा में, अर्जुन के अपने सगे संबंधियों के प्रति मोह भाव में दबे होने पर श्री कृष्ण ने उन्हें ज्ञान बोध कराके, प्रकाश का मार्ग दिखा कर अपना कर्म निर्वहण करने का मार्ग दर्शन किया।

श्री कृष्ण एक महानज्ञानी हैं! यदि वह चाहते तो युद्ध को अनायास रोक सकते थे। परंतु उन्होनें कभी दूसरों के कर्मों में दखल नहीं दी, उनमें स्थित स्वयं निर्णय लेने की शक्ति में कभी रुकावट नहीं डाली। यह उनके प्रेम तथा ज्ञान का महान प्रतीक है!

गौतम बुद्ध के विषय में भी ऐसा ही है। उन्होंने यह बोध किया कि जब तक कोई स्वयं अपने दुखों से बाहर नहीं निकलना चाहेगा, तब तक कोई दूसरा उसे दुख से बाहर नहीं निकाल सकता। इसलिए बुद्ध ने लोगों को ध्यान करना सिखाया। वह स्वयं कौन हैं? अर्थात खुद को पहचानने तक उन्हें कोई भी उनके कष्टों से मुक्ति नहीं दिला सकता।

क्या बुद्ध में प्रेम नहीं है? उनके हृदय में अनंत प्रेम है! "प्रेम", "दया", ये गुण उनके व्यक्तित्व की मजबूत दीवारें हैं। चमत्कार अथवा महिमाएँ दिखायेंगे तो प्रजा गलत मार्ग पर चली जाएगी, यह सोचकर उन्होंने कभी चमत्कार नहीं दिखाए । प्रजा को शाश्वत रूप से परिष्कार देकर, उनकी सहायता करने के उद्देश्य से "ध्यान मार्ग" का बोध कराया। वह संपूर्ण ज्ञान एवं दिव्य दृष्टि प्राप्त, एक अद्भुत श्रेणी के महान मास्टर हैं!

"कर्मचक्र कैसे प्रारंभ हुआ?" प्रश्न पर पुन: आयेंगे। प्रारंभ में, स्वच्छंद रूप से विचार करने वाले क्षेत्र में भरपूर प्रेम एवं भ्रातृत्व भाव था। धीरे-धीरे, उस क्षेत्र से भलीभाँति परिचय प्राप्त करने के पश्चात, कुछ आत्माएँ भौतिक वस्तुओं के लिए व्यग्र होने लगी। कुछ आत्माएँ सुख एवं इच्छाओं के प्रभाव में आकर, उन्हें "अपनाने का भाव" उनमें उत्पन्न हुआ। इन आत्माओं को अपने कार्यों द्वारा, अपने देवत्व के कारण, सुख, वैभव और विलास पूर्ण जीवन की आदत पड़ गई। उनके जीवन जीने की पद्धति.. सुख, वैभव पूर्ण जीवन विधान को देखकर "स्पर्धा" शुरू हो गई। प्रारंभ में तो उचित लगा किंतु धीरे-धीरे बात धोखा-धड़ी, मार-पीट तक पहुँच गई। ऐसे समय में सृष्टिकर्ता ने एक सिद्धांत तैयार किया - जो कोई प्रकृति के विरुद्ध जाकर व्यवहार करेंगे, वह सब इस नए सिद्धांत अर्थात "कर्म सिद्धांत" के बंदी हो जायेंगे!!

इस कर्म चक्र को समग्र आकार देने के लिए "आकाशिक विज्ञान कोष" (आकाशिक रिकार्ड्स) प्रारंभ हुए। इस संदर्भ में विस्तृत रूप से यह जानना आवश्यक है कि जब से ये आत्माएँ अपनी "दैवप्रकृति" को भूल गईं, तब से ही आकाशिक रिकार्ड्स का प्रारंभ हुआ। जो आत्मा अपने कर्म ऋण को चुकाने के लिए तत्पर होगी, उस आत्मा को यह आकाशिक रिकार्ड्स उपलब्ध होंगें।

एक और विषय स्पष्ट रूप से जानने की आवश्यकता है कि पृथ्वी लोक छोड़ने के पश्चात अधिक प्रमाण में आत्माएँ इसके ऊपर के ही लोक "इच्छा लोक" (पहला सूक्ष्म लोक) में प्रवेश करती हैं। इस लोक में जिन आत्माओं का ज्ञान कम हो और इच्छाएँ अधिक हों, वे अपनी इच्छाओं की पूर्ति में ही सारा समय बिता देती हैं। इस लोक में प्रवेश करने वाली आत्माओं को भी बोधन तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता है। किंतु उनमें अधिकतर आत्माएँ इस ज्ञान बोध की परवाह नहीं करती हैं। फिर भी उनकी इच्छाएँ बिना किसी श्रम के, अनायास एवं तुरंत ही पूर्ण होने के कारण आखिरकार वे आत्माएँ ऊबकर धीरे-धीरे ज्ञान बोध की ओर दृष्टि पसारने लगती हैं।

इस लोक में आत्माओं को अधिक प्रमाण में आध्यात्मिक ज्ञान न होने के कारण, आकाशिक रिकार्ड्स के बारे में जानने के बाद वे शीघ्र अपनी चरितावली का अवलोकन करती हैं। अपने अज्ञान के कारण ये आत्माएँ, अपने कर्म ऋण को किस प्रकार चुकाएँ तथा नए कर्म जमा न हों, इस विधान को जाने बिना ही शीघ्र भूलोक में फिर से जन्म लेती हैं। इस प्रकार शीघ्र निर्णय लेने के कारण अधिक जन्मों तक वह कर्म ऋण को एकत्रित करती रहती हैं।

अब हम कर्म के विषय में विस्तार से जानेंगे। जीवन चक्र में इच्छा या इन्द्रियों से संबंधित विचार या कार्यों द्वारा व्यक्ति का जमा ऋण, उसे इस जन्म में अथवा अगले जन्मों में चुकाना होगा। जमा ऋण की तीव्रता पर वह परिवर्तित होते रहते हैं। हमारे जीवन को हमने 'शून्य कर्म मूल्य' से आरंभ किया था इसलिए जब तक हमारे कर्म मूल्य फिर से शून्य न हो जाएँ तब तक ज्ञानोदय नहीं होगा। कर्म मूल्य घटते-घटते व्यक्ति को प्रकृति मूल सिद्धांतों का अधिकाधिक ज्ञान होता है। इस तरह उनमें ज्ञान बढ़कर प्रवाहित होते समय, परमात्मा को देखने के लिए सही ज्ञान, विज्ञान होना चाहिए अन्यथा अपने ध्येय को छोड़कर गलत मार्ग पर चलने की संभावना रहती है। इसलिए कर्म को पार करने के विषय में सही ज्ञान और विज्ञान दोनों का महत्व है।

'कर्म' पर हमारी चर्चा को केंद्रीकृत करें तो उसे दो भागों में बाँटा जा सकता है। पहला 'नित्यकर्म', दूसरा 'सत्यकर्म'। 'नित्य कर्म' को फिर से दो भागों में बाँट सकते हैं। पहला "बुरा कर्म", दूसरा "अच्छा कर्म"।

बुरा कर्म

एक व्यक्ति विचारों या कार्यों द्वारा, दूसरे की आत्मा की प्रगति के लिए, परिणाम के लिए, अथवा दैनिक जीवन के लिए संकट या बाधा उपस्थित करे और उसकी स्वेच्छा में रुकावट डाले तो उसे "बुरा कर्म" कहते हैं।

यहाँ पर "विचार" तथा "कार्य" दोनों को समान प्राधान्यता है। विचार एवं कार्य दोनों ही कर्मफल देते हैं। वास्तव में कहा जाए तो निरंतर रहने वाला एक बुरा विचार, कुछ बुरे कार्यों से भी अधिक प्रमाण में कर्म को जमा करता है। एक बुरा कार्य, अधिकतर क्षणों के आवेश की तीव्रता के कारण करते हैं। उसके बाद वह व्यक्ति पश्चाताप करके "अरे! इस तरह न करके भविष्य में संभलकर रहना चाहिए", ऐसी कोशिश करता है। किंतु बुरा विचार हमारे मन में घुसने पर भी हम अनदेखा कर देते हैं क्योंकि वह बाह्यरूप में कार्य के समान दिखता नहीं है।

असल में, एक व्यक्ति बुरा सोचे तो उसके द्वारा तुरंत कोई कार्य ना किए जाने पर भी, उन्ही परिस्थितियों में स्थित अन्य व्यक्ति के बुरे विचारों को शक्ति प्रदान करके, उससे बुरा कार्य करवाने का कारण बनता है। इसलिए एक व्यक्ति को अपने बुरे कर्म से मुक्ति पानी है तो अपने कार्यों के साथ-साथ विचारों के विधानों पर भी निगरानी रखनी चाहिए।

अच्छा कर्म

अच्छा करने पर भी कर्म को संगृहित करते हैं? हाँ, अच्छे कार्यों द्वारा भी कर्म बनते हैं। 'यह कार्य करने से मेरा अच्छा होगा' इस उद्देश्य से अच्छे कार्य करने पर और उसके फल की चाह करने पर निश्चय ही उस कार्य से कर्म बनता है। अच्छे कर्म इस जन्म में और अगले जन्म में भी उपयोगी होंगे किंतु कर्म तो कर्म ही होता है, अच्छा हो या बुरा। हमें और एक बार जीवन चक्र में लेकर आने का कारण बनकर, फिर से हर जन्म में नए कर्मों के जमा होने की संभावना रहेगी। कर्म चक्र पार करने के लिए हर एक को अच्छे और बुरे कर्म, हर कर्म से पार होना होता है।

अच्छे कर्म को कैसे पार करते हैं? दूसरों के लिए आपके द्वारा किए गए एक अच्छे कार्य (कृत्य) से उनकी अच्छी परिस्थिति हो गई तो ऐसा मानना चाहिए कि यह एक अच्छा कार्य है। इस प्रकार के अच्छे कार्य करना मेरा स्वभाव है।

अच्छा करना, अच्छी अनुभुतियों में रहना, हर एक जीव का स्वाभाविक गुण है; इसके लिए गर्व नहीं करना चाहिए। उससे किसी प्रकार की चाह भी नहीं रखनी चाहिए। ऐसी भावना नाम में भी नहीं रखनी चाहिए। यदि हमने इस तरह सोचना प्रारंभ कर दिया तो हम नए कर्मों को जमा नहीं करेंगे। किए हुए अच्छे कार्यों के फलस्वरूप प्राप्त नाम, ऐश्वर्य, पद, प्रतिष्ठा मिले तो नए कर्मों को जमा करके सही विधान में जीवन निर्वहण नहीं कर पाते हैं।

स्वाभाविक गुणों में रहते हुए अच्छे कार्यों के फलस्वरूप प्राप्त नाम, ऐश्वर्य, पद, प्रतिष्ठा को विश्व कल्याण और अपनी उन्नति के उपयोग में लाया जा सकता है। यह ज्ञान बोध पाकर सुख एवं शांति पूर्वक जीवन जीने पर, आत्म-साक्षात्कार के लिए किया जाने वाला आपका पथ (प्रयाण) निकट हो जाता है।